APEX PROFESSIONAL UNIVERSITY
Statutory University u/s 2(f) UGC Act,1956

Bhartiya Knowledge Systems
Volume III, Issue I, June 2025

भारतीय शिक्षा प्रणाली; पाश्च्य से भविष्य तक

डॉ अभिषेक कुमार पाण्डेय[1]

सार:

शिक्षा प्रणाली भविष्य की पीढ़ी को प्रशिक्षित करने और तैयार करने का एक मंच है। शिक्षा के माध्यम से अर्जित ज्ञान और कौशल किसी व्यक्ति को अधिक रोजगार योग्य बनाते हैं। प्राचीन से आधुनिक शिक्षा प्रणाली की ओर संक्रमण के कारण भारतीय शिक्षा प्रणाली अन्य देशों की शिक्षा प्रणालियों की तुलना में अधिक विविध और सराही जाने वाली है। प्राचीन और मध्यकालीन शिक्षा के दौर में शिक्षक अपने विद्यार्थियों को उस समय के जीवन और परिस्थितियों में जीने और सफल होने योग्य बनाते थे। स्वतंत्रता के बाद से भारतीय शिक्षा प्रणाली ने काफी प्रगति की है और सभी क्षेत्रों में शिक्षा व प्रशिक्षण प्रदान कर रही है, फिर भी यह वैश्विक स्तर पर बाज़ार की आवश्यकताओं को पूर्ण रूप से पूरा करने में सक्षम नहीं हो पाई है। इस अध्याय में मुख्य रूप से प्राचीन और मध्यकालीन काल की भारतीय शिक्षा प्रणाली की शिक्षण पद्धति, पाठ्यक्रम, विशेषताएँ, अधिगम रणनीतियाँ और उद्देश्यों पर चर्चा की गई है। साथ ही यह भी बताया गया है कि ये काल आधुनिक शिक्षा से कैसे भिन्न थे और आधुनिक शिक्षा इनसे क्या सीख सकती है तथा उसे कैसे लागू किया जा सकता है। प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक शिक्षा की खूबियों और कमियों का तुलनात्मक अध्ययन भी इन्हीं कारकों के आधार पर किया गया है। इस अध्याय के माध्यम से विद्यार्थी और शिक्षक शिक्षा प्रणाली में विद्यमान विभिन्नताओं को समझेंगे और यह भी जान पाएंगे कि भविष्य में सभी समस्याओं के समाधान हेतु और क्या परिवर्तन आवश्यक हैं।

कीवर्ड्स: शिक्षा, अधिगम, पाठ्यक्रम, प्राचीन काल, मध्यकाल, आधुनिक काल

1. प्रस्तावना

भारत की अर्थव्यवस्था तकनीकी प्रगति के कारण तीव्र गति से विकसित हुई है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने भारत के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत में विकसित देशों की तुलना में अधिक युवा आबादी है। उचित शिक्षा युवाओं को भविष्य के लिए तैयार करने, उन्हें कुशल मानव संसाधन बनाने तथा औद्योगिक विकास को प्रोत्साहित करने में सहायक होगी, जिससे आर्थिक प्रगति भी संभव होगी। वर्तमान शिक्षा युग में प्रत्येक संस्था या विश्वविद्यालय अपनी शिक्षण पद्धतियों में नए तरीकों को

[1] सह आचार्य और विभागाध्यक्ष,शोध और अन्वेषण संस्थान, अपेक्स प्रोफेसनल विश्वविद्यालय, पासीघाट, अरुणाचल प्रदेश, भारत

अपनाने का प्रयास कर रहा है। विश्व की सबसे बड़ी और प्रसिद्ध शिक्षा प्रणाली भारत की है। इतिहास की दृष्टि से देखें तो प्राचीन काल में तक्षशिला, नालंदा, वल्लभी आदि जैसी पाँच प्रमुख विश्वविद्यालय थीं, जिनका उद्देश्य विद्यार्थियों का समग्र विकास करना था। मध्यकाल में मदरसे और मक़तब जैसे संस्थान अस्तित्व में आए, जिनका मुख्य ध्यान भविष्य के नेताओं का निर्माण और धार्मिक शिक्षा पर केंद्रित था। वहीं, आधुनिक काल में आईआईटी (IITs) और आईआईएम (IIMs) जैसे स्वतंत्र और प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय स्थापित हुए, जो आज वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध हैं। प्राचीन काल में विद्यार्थी अपने माता-पिता से दूर रहकर अर्थशास्त्र, राजनीति, मानसिक एवं शारीरिक शिक्षा आदि का अध्ययन करते थे। उन्हें इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाता था कि वे हर परिस्थिति में जीवन यापन कर सकें। मध्यकालीन शिक्षा यद्यपि मुख्य रूप से धार्मिक थी, फिर भी उसमें प्राचीन शिक्षा की ही कई प्रक्रियाएँ अपनाई गईं। आधुनिक समय में आईआईटी और आईआईएम जैसी संस्थाओं ने पाठ्यक्रम, समग्र विकास तथा विद्यार्थियों के जीवन स्तर में बदलाव लाए हैं। आज विद्यार्थियों का मुख्य उद्देश्य केवल सफलता प्राप्त करना और लक्ष्य हासिल करना बन गया है। आधुनिक शिक्षण पद्धतियाँ केवल कुछ चुनिंदा संस्थाओं - जैसे आईआईटी, आईआईएम और कुछ निजी व सहायता प्राप्त विश्वविद्यालयों - तक ही सीमित हैं। प्रत्येक संस्था का पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धति और विद्यार्थी का जीवन स्तर अलग-अलग है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली का पाठ्यक्रम न तो उद्योगोन्मुख है और न ही उभरते रुझानों के अनुरूप। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अभी भी व्यवहारिक की बजाय अधिक सैद्धांतिक है। इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य यह बताना है कि प्राचीन और मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली के कौन से तत्व हमारी आधुनिक प्रणाली में अपनाए जा सकते हैं और उनसे जुड़े कौन से नए रुझान उपयोगी हो सकते हैं।

2. प्राचीन शिक्षा

प्राचीन काल में मुख्यतः दो शिक्षा प्रणालियाँ प्रचलित थीं - बौद्ध एवं वैदिक। बौद्ध शिक्षा प्रणाली की भाषा *पाली* थी, जबकि वैदिक शिक्षा प्रणाली की भाषा *संस्कृत* थी। उस समय शिक्षा के प्रमुख स्रोत *वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद* और *धर्मसूत्र* थे। ऋग्वेद से प्रारंभ हुई प्राचीन शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों के आंतरिक और बाह्य व्यक्तित्व का विकास करना था। प्राचीन शिक्षा में विद्यार्थियों को आत्मनिर्भरता, अनुशासन, विनम्रता, सत्यनिष्ठा और सभी जीवों के प्रति सम्मान जैसे गुण सिखाए जाते थे।

अधिकांश शिक्षा *गृह, मंदिर, आश्रम* और *गुरुकुल* में दी जाती थी। कभी-कभी मंदिरों के पुजारी भी विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते थे। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में कुछ ऐसी विशेषताएँ थीं जो विश्व

की अन्य समकालीन शिक्षा प्रणालियों में नहीं मिलतीं। अधिकांश शिक्षण प्राकृतिक वातावरण में, नीले आकाश के नीचे, वनों में होता था, जिससे विद्यार्थियों का मन सदा ताज़ा और सक्रिय बना रहता था। उस समय के लोग सादा जीवन जीते थे और अपने कार्य के प्रति निष्ठावान एवं परिश्रमी रहते थे।

2.1 शिक्षा का उद्देश्य

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को उच्च स्तर की शिक्षा प्रदान करना था। पाठ्यक्रम का केंद्र बिंदु उच्च आदर्शों का निर्माण, संस्कृति का संवर्धन, चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास था। विद्यार्थियों के मानसिक, शारीरिक और बौद्धिक व्यक्तित्व का विकास कर उन्हें भविष्य के लिए तैयार करना तथा हर परिस्थिति में जीवन-यापन योग्य बनाना ही शिक्षा का लक्ष्य था।

2.2 शिक्षा की विशेषताएँ

प्राचीन काल में शिक्षा प्रणाली में न तो राज्य सरकार और न ही जनसाधारण का हस्तक्षेप होता था। पाठ्यक्रम निर्माण, शुल्क निर्धारण और कक्षाओं के आयोजन का अधिकार शिक्षकों के पास होता था। *गुरु-शिष्य संबंध* अत्यंत सुदृढ़ और महत्त्वपूर्ण था। प्रत्येक विद्यार्थी का एक ही गुरु होता था और विद्यार्थी व्यक्तिगत रूप से गुरु से ज्ञान प्राप्त करते थे।

राजा और राजपरिवार के सदस्य शिक्षा के स्तर और दायरे को बढ़ाने हेतु अपना धन दान करते थे। पाठ्यक्रम समय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता था। विद्यार्थी घर छोड़कर अपने गुरु के साथ गुरुकुल में रहते थे और शिक्षा पूर्ण होने तक वहीं निवास करते थे।

प्रारंभिक वैदिक काल में *नारी शिक्षा* को भी महत्व दिया गया। विद्यार्थियों के *मानसिक और शारीरिक विकास* पर विशेष बल दिया जाता था। लगभग दस से बारह वर्षों की शिक्षा अवधि में पुस्तकों का अभाव होने के कारण *स्मृति-आधारित शिक्षा* दी जाती थी, जिसमें विद्यार्थियों को सब कुछ कंठस्थ करना पड़ता था।

शिक्षा प्राकृतिक वातावरण में, नगर और भीड़-भाड़ से दूर, वनों में दी जाती थी, ताकि विद्यार्थियों को शांति और एकाग्रता का वातावरण मिल सके।

यह शोधपत्र मुख्यतः तीन भागों में विभाजित है - प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक शिक्षा प्रणाली। प्रत्येक भाग में उप-खंड दिए गए हैं, जिनमें पाठ्यक्रम, अधिगम पद्धतियाँ, शैक्षिक उद्देश्य, शैक्षिक संस्थान, उच्च शिक्षा संस्थान तथा प्रत्येक शिक्षा प्रणाली की खूबियाँ और कमियाँ शामिल हैं।

2.3 पाठ्यक्रम (Curriculum)

शिक्षा प्रणाली में *पाठ्यक्रम* की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। यह स्थिर न होकर *गतिशील* था और विभिन्न चरणों में विभाजित था। उत्तम पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों का शारीरिक एवं मानसिक विकास करना था।

वैदिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में चार *वेद*, छह *वेदांग*, *उपनिषद*, *दर्शन शास्त्र*, *पुराण* और *तर्कशास्त्र* सम्मिलित थे। छह वेदांग थे - *शिक्षा, छंद, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और कल्प*। दर्शन शास्त्रों में *न्याय, वैशेषिक, योग, वेदान्त, सांख्य* और *मीमांसा* प्रमुख थे। उस समय *बीजगणित, ज्यामिति* और *व्याकरण* को भी विशेष महत्व दिया जाता था। व्याकरण के क्षेत्र में *पाणिनि* अत्यंत प्रसिद्ध थे।

बौद्ध शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम में *पिटक, अभिधम्म* और *सूत्र* सम्मिलित थे। साथ ही आयुर्वेद तथा वेदों को भी महत्व दिया जाता था। यद्यपि बौद्ध शिक्षा में अधिक जोर बौद्ध ग्रंथों पर था, फिर भी हिन्दू शिक्षण पद्धति का भी उसमें समावेश था। उस समय दोनों शिक्षा प्रणालियाँ समानांतर रूप से चल रही थीं।

शिक्षा मुख्यतः *मौखिक और वाद-विवाद* के माध्यम से दी जाती थी तथा प्रत्येक वर्ष परीक्षाएँ आयोजित की जाती थीं। प्राचीन शिक्षा में *युद्धकला, सैनिक शिक्षा, राजनीति* और *धर्म* जैसे विषयों पर विशेष ध्यान दिया जाता था।

2.4 अधिगम की पद्धतियाँ (Methods of Learning)

उस समय शिक्षक अपने विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान देते थे और उनकी क्षमता व ज्ञान स्तर के अनुसार शिक्षा प्रदान करते थे। शिक्षण की पद्धति मुख्यतः *मौखिक और वाद-विवाद* पर आधारित थी। इसके अंतर्गत विभिन्न विधियाँ प्रयोग में लाई जाती थीं -

- उस समय पुस्तकें उपलब्ध नहीं थीं, इसलिए विद्यार्थी जो कुछ भी कक्षा में पढ़ाया जाता, उसे कंठस्थ करते थे। शिक्षक भी उन्हें याद कराने में सहायता करते थे।
- विद्यार्थी शिक्षकों द्वारा पढ़ाए गए विषयों की गहराई में जाकर स्वयं नए तरीकों से उसे समझने का प्रयास करते थे।
- *श्रवण (सुनना), मनन (चिंतन)* और *निदिध्यासन (गहन चिंतन)* अधिगम की महत्वपूर्ण पद्धतियाँ थीं।
- शिक्षक विद्यार्थियों को शिक्षित करने के लिए *कहानी सुनाने की विधि* अपनाते थे।
- विद्यार्थी पढ़ाए गए विषयों पर प्रश्न करते और फिर उन पर चर्चा होती तथा उत्तर दिए जाते।

- शिक्षा का मुख्य उद्देश्य *व्यावहारिक ज्ञान* प्रदान करना था।
- समय-समय पर आयोजित *वाद-विवाद और संगोष्ठियों* के माध्यम से विद्यार्थी गहन ज्ञान अर्जित करते थे।

2.5 शैक्षिक संस्थान (Educational Institutions)

- **गुरुकुल** - यह गुरु का आश्रय-स्थान होता था, जहाँ विद्यार्थी *उपनयन संस्कार* के बाद आते और शिक्षा पूर्ण होने तक वहीं निवास करते थे।
- **परिषद / अकादमियाँ** - यह उच्च शिक्षा प्राप्त करने का स्थान था, जहाँ विद्यार्थी चर्चा और वाद-विवाद के माध्यम से ज्ञान अर्जित करते थे।
- **गोष्ठियाँ / सम्मेलन** - यहाँ राज्यों के राजा विभिन्न संस्थानों के विद्वानों को आमंत्रित कर विचार-विनिमय कराते थे।
- **आश्रम** - यह ऐसे शिक्षा केंद्र थे जहाँ देश के विभिन्न हिस्सों से विद्यार्थी आकर ऋषि-मुनियों से शिक्षा प्राप्त करते थे।
- **विद्यापीठ** - यह आध्यात्मिक शिक्षा का स्थान था, जिसकी स्थापना *आदि शंकराचार्य* ने श्रृंगेरी, कांची, द्वारका और पुरी आदि स्थानों पर की थी।
- **अग्रहारा** - यह ब्राह्मणों द्वारा गाँवों में स्थापित संस्थाएँ थीं, जहाँ वे विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते थे।
- **विहार** - यह बौद्धों द्वारा स्थापित शैक्षिक संस्थान थे, जहाँ विद्यार्थियों को बौद्ध धर्म और दर्शन से संबंधित शिक्षा दी जाती थी।

2.6 उच्च शिक्षा संस्थान (Higher Educational Institutions)

1. **तक्षशिला (Taxila)** - तक्षशिला प्राचीन काल का अत्यंत प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र था, जहाँ *बौद्ध धर्म* और *धार्मिक ग्रंथों* के साथ-साथ उच्च शिक्षा दी जाती थी। यहाँ *शास्त्र, विधि, आयुर्वेद, समाजशास्त्र, खगोलशास्त्र, सैन्य विज्ञान* तथा *18 शिल्पों* का अध्ययन कराया जाता था। इस विश्वविद्यालय के प्रमुख विद्वानों में महान व्याकरणाचार्य *पाणिनि* थे, जिन्होंने व्याकरण विषय में अपनी प्रसिद्ध कृति *अष्टाध्यायी* लिखी। राजनीति शास्त्र और कूटनीति के विशेषज्ञ *चाणक्य* भी यहीं के विद्यार्थी रहे। काशी, कोसल, मगध ही नहीं, बल्कि विदेशों से भी विद्यार्थी कठिन यात्राएँ कर यहाँ शिक्षा के

लिए आते थे। वर्तमान समय में तक्षशिला पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिम भाग में स्थित है और *यूनेस्को (UNESCO)* द्वारा 1980 में इसे *विश्व धरोहर स्थल* घोषित किया गया।

2. **नालंदा** - जब *ह्वेनसांग (Xuanzang)* नालंदा आए तो इसे *नाला* कहा जाता था। यह शिक्षा का प्रमुख केंद्र था, जहाँ देश-विदेश से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने आते थे। यहाँ *वेद, ललित कलाएँ, आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र* आदि विषय पढ़ाए जाते थे। ह्वेनसांग ने स्वयं यहाँ *योगशास्त्र* का अध्ययन किया। नालंदा, जो वर्तमान में *राजगीर (बिहार, भारत)* में स्थित है, को भी *यूनेस्को* द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है।

अन्य प्रमुख विश्वविद्यालयों में *वल्लभी, विक्रमशिला, उज्जैन* और *वाराणसी* सम्मिलित थे।

2.7 प्राचीन शिक्षा की विशेषताएँ (Advantages)

- विद्यार्थियों के *सर्वांगीण विकास* पर ध्यान दिया जाता था।
- *व्यावहारिक ज्ञान* को अधिक महत्व दिया जाता था, न कि केवल सैद्धांतिक ज्ञान को।
- विद्यार्थियों का उद्देश्य केवल रैंक प्राप्त करना नहीं, बल्कि *ज्ञान अर्जन* करना होता था।
- शिक्षा वनों और प्राकृतिक वातावरण में दी जाती थी, जो छात्रों को शांत और आनंददायक वातावरण प्रदान करता था।
- विद्यार्थियों पर शिक्षा का *अनावश्यक दबाव* नहीं डाला जाता था, जिससे वे स्वतंत्र रूप से सीखते थे।
- शिक्षा प्रणाली में सरकार का हस्तक्षेप नहीं था, बल्कि उस समय *राजा* शिक्षा के विकास में सहयोग करते थे।

2.8 प्राचीन शिक्षा की सीमाएँ (Disadvantages)

- स्त्रियों को *गुरुकुल* में प्रवेश नहीं दिया जाता था।
- शिक्षा प्रणाली में *जातिगत भेदभाव* था। केवल क्षत्रिय वर्ग को युद्धकला सिखाई जाती थी। *एकलव्य* को गुरुकुल में प्रवेश नहीं दिया गया।

3. मध्यकालीन शिक्षा (Medieval Education)

आठवीं शताब्दी ईस्वी में बड़ी संख्या में *मोहम्मदी आक्रमणकारी* भारत आए। *महमूद गजनवी* ने भारत पर आक्रमण कर यहाँ अनेक विद्यालय और पुस्तकालय स्थापित किए, जो लूटे हुए धन से चलाए जाते थे।

बाद में मुस्लिम शासकों ने भारत में स्थायी साम्राज्य स्थापित किया और एक नई शिक्षा प्रणाली का आरंभ किया। इससे प्राचीन शिक्षा प्रणाली में बड़ा परिवर्तन आया। अरबों और तुर्कों ने भारत में नई संस्कृति, परंपराएँ और संस्थाएँ लाईं। इसमें सबसे बड़ा परिवर्तन *इस्लामी शिक्षा प्रणाली* का प्रसार था, जो *बौद्ध* और *ब्राह्मणिक* शिक्षा प्रणाली से भिन्न थी। मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली का मुख्य आधार *इस्लामी एवं मुगल शिक्षा व्यवस्था* थी।

3.1 शिक्षा का उद्देश्य (Aim of Education)

मध्यकालीन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था - *ज्ञान का प्रसार* और *इस्लाम का प्रचार-प्रसार*। इस शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य इस्लामी सिद्धांतों और सामाजिक परंपराओं को फैलाना था। शिक्षा का मकसद लोगों को *धार्मिक दृष्टिकोण* वाला बनाना था।

3.2 शिक्षा की विशेषताएँ (Characteristics of Education)

- शासकों ने शिक्षा के प्रसार और विकास में सहयोग किया। उन्होंने अनेक *शैक्षणिक संस्थानों* की स्थापना की और उन्हें आर्थिक सहायता दी।
- बड़े जमींदारों ने भी संस्थानों के विकास हेतु धन दान किया।
- शासक इन संस्थानों के प्रबंधन और संचालन में हस्तक्षेप नहीं करते थे।
- गुरु-शिष्य संबंध *बौद्ध और ब्राह्मणिक काल* की भाँति ही अच्छा था, यद्यपि विद्यार्थी उस समय अपने गुरु के साथ नहीं रहते थे।
- शिक्षक विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से पढ़ाते और उनके अध्ययन में रुचि लेते थे।

3.3 पाठ्यक्रम (Curriculum)

उस समय पुस्तकों का प्रचलन बहुत कम था। विद्यार्थी तख्ती पर लिखकर अभ्यास करते थे। शिक्षा की शुरुआत अक्षरों से होती थी और धीरे-धीरे शब्द तथा वाक्य बनाना सिखाया जाता था। **सुलेख (Calligraphy)** और **व्याकरण** प्रमुख विषय थे। विद्यार्थी गुणा-पहाड़े (पहाड़ा) याद करते थे।

- **अरबी और फारसी** संचार की मुख्य भाषाएँ थीं।
- उच्च पदों पर पहुँचने के लिए इन भाषाओं का ज्ञान अनिवार्य था।
- **कुरान का पाठ** अनिवार्य था और विद्यार्थी इसे कंठस्थ करते थे।
- बच्चों को प्रारंभिक आयु में कुरान के 13 अध्याय काव्य रूप में कंठस्थ कराए जाते थे।

- इस्लामी विद्वान **इब्न सीना** का मत था कि 14 वर्ष की आयु में विद्यार्थियों को अपनी पसंद का विषय चुनने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए जैसे साहित्य, चिकित्सा, ज्यामिति, व्यापार आदि।

शिक्षा के दो प्रकार थे:

1. **धार्मिक शिक्षा** - कुरान, मोहम्मद साहब का जीवन, इस्लामी कानून, इतिहास।
2. **सांसारिक शिक्षा** - अरबी साहित्य, व्याकरण, दर्शन, गणित, भूगोल, राजनीति, अर्थशास्त्र, ग्रीक भाषा और कृषि।

3.4 अधिगम की विधियाँ (Methods of Learning)

- मुख्य रूप से मौखिक शिक्षा, वाचन और चर्चा पर बल था।
- अकबर ने छात्रों को व्यवस्थित रूप से पढ़ने-लिखने और लिपियों में सुधार करने की प्रेरणा दी।
- पहले अक्षर, फिर शब्द और उसके बाद वाक्य रचना सिखाने पर बल था।
- **व्यावहारिक शिक्षा** पर विशेष ध्यान दिया जाता था।
- कोई वार्षिक या अर्धवार्षिक परीक्षा नहीं होती थी, बल्कि विद्यार्थियों का मूल्यांकन जीवन की व्यावहारिक परिस्थितियों में किया जाता था।
- **3.5 शैक्षिक संस्थान (Educational Institutions)**

1. **मकतब (Maktabs)** -
   - आम जनता के बच्चों की प्राथमिक शिक्षा का केंद्र।
   - धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ पठन, लेखन, अंकगणित और पत्र लेखन सिखाया जाता।
   - फारसी साहित्य (जैसे लैला-मजनूं, यूसुफ-जुलेखा) भी पढ़ाया जाता था।
2. **मदरसे (Madrasas)** -
   - उच्च शिक्षा के केंद्र।
   - अकबर ने यहाँ केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि हिंदू धर्म और दर्शन भी पढ़ाए जाने की व्यवस्था की।
   - चिकित्सा, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति, ज्योतिष, दर्शन और गणित प्रमुख विषय थे।
   - संस्कृत विद्यार्थियों के लिए वेदांत, न्यायशास्त्र और पतंजलि की शिक्षा अनिवार्य की गई।

3.6 प्रमुख शिक्षा केंद्र (Important Educational Centres)

1. **दिल्ली** - नसीरुद्दीन ने *मदरसा-ए-नसीरिया* की स्थापना की। हुमायूँ ने खगोल और भूगोल के बड़े संस्थान स्थापित किए।
2. **आगरा** - सिकंदर लोदी और अकबर ने आगरा को संस्कृति, कला और शिक्षा का केंद्र बनाया।
3. **जौनपुर** - शेरशाह सूरी ने यहाँ शिक्षा प्राप्त की। राजनीतिक विज्ञान, युद्धकला और दर्शन मुख्य विषय थे।
4. **बीदर** - मोहम्मद गवन ने मदरसे और पुस्तकालय स्थापित किए, जिसमें 3000 पुस्तकें थीं।

3.7 लाभ (Advantages)

- व्यावहारिक शिक्षा को महत्व।
- छात्र-शिक्षक संबंध मधुर।
- शासकों का शिक्षा में सहयोग।

3.8 हानियाँ (Disadvantages)

- धार्मिक और इस्लामी शिक्षा पर अत्यधिक जोर।
- छात्रों का लक्ष्य मुख्य रूप से शासन और नेतृत्व तक सीमित।

4. आधुनिक शिक्षा (Modern Education)

मध्यकाल के अंत में ब्रिटिशों ने भारत में आधुनिक शिक्षा की नींव डाली।

- **1830 में मैकॉले** ने अंग्रेज़ी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया।
- प्रारंभ में शिक्षा का उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार था।
- समय के साथ शिक्षा विज्ञान, तकनीकी और नवाचार से जुड़ गई।

4.1 उद्देश्य (Aim of Education)

- समानता, धर्मनिरपेक्षता और सबके लिए शिक्षा।
- पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक मूल्यों का विकास।
- निर्धन वर्ग को शिक्षा का अवसर।
- बदलते औद्योगिक और तकनीकी वातावरण के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना।

4.2 विशेषताएँ (Characteristics)

- शिक्षक-विद्यार्थी संबंध बने रहे, परंतु विद्यार्थी अब गुरु के घर नहीं रहते थे।
- **ऑनलाइन शिक्षा, MOOC, YouTube, Coursera, Udemy** जैसे साधन बढ़े।
- चिकित्सा और विमानन क्षेत्र में व्यावहारिक शिक्षा पर जोर।
- **महिला शिक्षा** को बढ़ावा और सरकारी योजनाएँ।
- प्रोजेक्टर, LED और कंप्यूटर जैसे उपकरणों का प्रयोग।

4.3 पाठ्यक्रम (Curriculum)

- **प्राथमिक शिक्षा (1st-10th)** - इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान, भाषाएँ।
- **माध्यमिक शिक्षा (11th-12th)** - विज्ञान और वाणिज्य की धारा में चुनाव।
- **स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षा** - कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक्स, सिविल, मैकेनिकल आदि में विशेषज्ञता।
- खेलकूद और सह-पाठयक्रम गतिविधियाँ भी अनिवार्य।

4.4 अधिगम विधियाँ (Methods of Learning)

- ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से शिक्षा।
- कक्षा में वाद-विवाद, चर्चा और प्रश्नोत्तर।
- मध्यावधि परीक्षा और प्रायोगिक परीक्षा।

4.5 शैक्षिक संस्थान (Institutions)

1. **विद्यालय (Schools)** - नर्सरी से 10वीं तक की शिक्षा। सांस्कृतिक और खेल गतिविधियों का आयोजन।
2. **महाविद्यालय (Colleges)** - 11वीं और 12वीं कक्षा, विज्ञान/वाणिज्य धारा का चुनाव।
3. **विश्वविद्यालय (Universities)** - उच्च शिक्षा, स्नातक व स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम। जैसे - पुणे विश्वविद्यालय, मुंबई विश्वविद्यालय आदि।

4.6 उच्च शैक्षणिक संस्थान (Higher Educational Institutions)

1. **भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IITs)** -
   - भारत में उच्च शिक्षा के लिए यह विश्व-प्रसिद्ध संस्थान हैं।
   - यहाँ स्नातक (UG), स्नातकोत्तर (PG) तथा शोध (PhD) स्तर तक शिक्षा दी जाती है।
   - वर्तमान में भारत में कुल 23 आईआईटी हैं।

- ○ हर वर्ष लाखों विद्यार्थी इनमें प्रवेश पाने के लिए प्रतियोगी परीक्षाएँ (JEE-Mains और JEE-Advance) देते हैं।
- ○ विद्यार्थियों को **ऑल इंडिया रैंक** (AIR) और अंकों के आधार पर संस्थान आवंटित किए जाते हैं।
- ○ उच्च स्तरीय शिक्षा, शोध कार्य और समृद्ध पाठ्यक्रम के कारण IITs की ख्याति विश्वभर में है

अन्य प्रमुख उच्च शिक्षण संस्थान

- **बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस (BITS)**
- **राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (NITs)**
- **भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc), बेंगलुरु**

4.7 आधुनिक शिक्षा के लाभ (Advantages)

- शिक्षा में तकनीकी साधनों का प्रयोग (ऑनलाइन लर्निंग, फ्रीलांसिंग, नई तकनीकें)।
- रोजगार को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कार्यक्रम और मिशन चलाए गए।
- उत्कृष्ट अवसंरचना (Infrastructure) और अनुकूल वातावरण से युक्त शीर्ष स्तरीय विश्वविद्यालय और महाविद्यालय।

4.8 आधुनिक शिक्षा की हानियाँ (Disadvantages)

- शिक्षा, प्रबंधन और पाठ्यक्रम में सरकार का अत्यधिक हस्तक्षेप।
- सरकारी विद्यालयों और महाविद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण और वातावरण की कमी।
- निजी विद्यालयों और महाविद्यालयों में फीस में लगातार वृद्धि।
- व्यावहारिक ज्ञान (Practical Knowledge) पर कम ध्यान।
- महँगी शिक्षा के कारण निर्धन एवं गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवार अपने बच्चों को उच्च शिक्षा नहीं दिला पाते, परिणामस्वरूप मजदूरी करने वालों की संख्या बढ़ रही है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थियों के लिए संसाधनों व संपर्क (Connectivity) की कमी।

5. निष्कर्ष (Conclusion)

आधुनिक युग में उद्योगों और तकनीक का विस्तार तीव्र गति से हो रहा है। प्रत्येक औद्योगिक क्षेत्र को ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जो उनकी आवश्यकताओं के अनुसार दक्ष हों। इस बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए हमारे वर्तमान शिक्षा तंत्र को निरंतर उन्नत करने की आवश्यकता है।

आज विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी केवल प्रतिस्पर्धा में आगे निकलने के लिए पढ़ाई कर रहे हैं, लेकिन उन्हें वास्तविक व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त नहीं हो पा रहा। अधिक कार्य और अध्ययन के दबाव के कारण छात्र तनावग्रस्त हो रहे हैं और आत्महत्या जैसी घटनाएँ भी सामने आती हैं।

हमारे शिक्षा तंत्र को **प्राचीन और मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली** से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है, जहाँ -

- व्यावहारिक ज्ञान पर बल दिया जाता था,
- शिक्षक-शिष्य संबंध घनिष्ठ थे,
- विद्यार्थियों का जीवन सरल और संतुलित था,
- शासकों का शिक्षा में योगदान रहा,
- और छात्रों पर अनावश्यक तनाव नहीं डाला जाता था।

भविष्य में औद्योगिक और वाणिज्यिक क्षेत्र और अधिक चुनौतीपूर्ण तथा प्रतिस्पर्धी होंगे। अतः सरकार को चाहिए कि वह ऐसा शिक्षा तंत्र प्रदान करे, जो विद्यार्थियों का **सर्वांगीण विकास** सुनिश्चित करे, उन्हें भविष्य के लिए तैयार करे और कठिन परिस्थितियों में जीवन जीने की क्षमता प्रदान करे।

संदर्भ ग्रंथ सूची (पृष्ठ संख्या सहित)

- शर्मा, रामनाथ (2005). *भारतीय शिक्षा का इतिहास*. दिल्ली: प्रकाशन केंद्र। पृ. 45-67।
- मिश्रा, विजय कुमार (2010). *प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय शिक्षा प्रणाली*. वाराणसी: ज्ञानगंगा प्रकाशन। पृ. 120-138।
- पाण्डेय, गोविन्द चन्द्र (2008). *भारतीय संस्कृति का इतिहास*. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास। पृ. 210-235।
- सिंह, सुरेश कुमार (2016). *आधुनिक भारतीय शिक्षा: विकास और समस्याएँ*. जयपुर: विद्यार्थी प्रकाशन। पृ. 56-78।
- चतुर्वेदी, नरेन्द्र (2012). *गुरुकुल से विश्वविद्यालय तक: भारतीय शिक्षा की यात्रा*. प्रयागराज: भारतीय विद्या भवन। पृ. 89-101।
- Altekar, A. S. (1934). *Education in Ancient India*. Varanasi: Banaras Hindu University Press. pp. 152-175.
- Sharma, R. N. (1996). *History of Education in India*. Delhi: Surjeet Publications. pp. 98-114.

- Aggarwal, J. C. (2002). *Development of Education System in India*. New Delhi: Shipra Publications. pp. 65-83.
- Mukerji, S. N. (1966). *Education in India: Today and Tomorrow*. Baroda: Acharya Book Depot. pp. 34-50
- Nurullah, S. & Naik, J. P. (1951). *History of Education in India (During the British Period)*. Bombay: Macmillan & Co. pp. 200-223.